National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 63-65

लोकवार्ता का ज्ञान के अन्य अनुशासनों से संबंध एवं विशेषताएँ

CH Nanda Kumar

University of Hyderabad, Centre for Dalit and Adivasi Studies & Translation, Hyderabad, Telangana, India

प्रस्तावना

'लोकवार्ता' शब्द हिंदी में अंग्रेजी के 'Folklore' का पर्याय मान लिया गया है। 'लोक' और 'वार्ता' शब्दों के मेल से 'लोकवार्ता' शब्द बना है। 'लोकवार्ता' शब्द के पर्यायवाची शब्द 'किंवदंती, अफवाह, जनसाहित्य, लोकवृत'[1] बतलाया गया है। 'फोकलोर' शब्द का निर्माण एक अंग्रेज पुरातत्त्वविद् विलियम जॉन थाम्स ने सन 1846 में किया था। पहले 'पॉपुलर एंटीक्विटीज' शब्द प्रयोग में अता था। 'पॉपुलर एंटीक्विटीज' का अर्थ लोकप्रिय अथवा 'लोकव्याप्त पुरातत्त्व' था। अब 'फोकलोर' शब्द सर्वत्र ग्राह्य हो गया है।'[2] 'फोकलोर' पद में दो शब्द सम्मिलित हैं–एक 'फोक' और दूसरा 'लोर'। 'फोक' शब्द की व्युत्पत्ति एंग्लो सैक्सन फोल्क (Folc) से मानी जाती है जर्मन भाषा में इसे वोल्क (Volk) कहते है। डॉ. बार्कन ने 'फोक' शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है कि 'फोक' शब्द सभ्यता से दूर रहने वाली किसी पूरी जाती का बोध होता है। दूसरा शब्द है लोर (lore) जो एंग्लो सैक्सन 'लर' (Lar) शब्द से निकला हुआ है। 'लोर' शब्द का अर्थ 'नालेज' (ज्ञान) होता है।'[3] 'फोकलोर' का अर्थ यह हुआ कि सामान्य जनता का ज्ञान।

लोकवार्ता में सामान्य जन जीवन का ज्ञान आता है। यह ज्ञान सामान्य जीवन के सामूहिक रूप की छाया में अंकुरित होता है। अतः उसके अध्ययन माध्यम से हम लोक चेतना को पहचान सकते हैं। किसी क्षेत्र-विशेष की संस्कृति को समझना होगा तो वहाँ के सामान्य जन जीवन की गतिविधियों को समझना होगा। हम लोकवार्ता के द्वारा वहाँ के निवासीयों के मनोविज्ञान, लोक-चेतना और चिंताधारा का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। अतः

उसका अध्ययन कई दृष्टियों-जैसे मानवविज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास , पुरातत्त्व,नृविज्ञान आदि दृष्टियों से किया जा सकता है।

मनुष्य के आरंभिक विकास से लेकर अबतक बुद्धिजीवियों ने कहीं शास्त्रों का निर्माण किया है। अबतक कोई भी शास्त्र ऐसा नहीं होगा जो कि अन्य शास्त्रों से उसका संबंध न रहा होगा और उसका स्वतंत्र रहकर विकास हुआ होगा। उदाहरण के तौरपर हम देख सकते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसके जीवन के विविध पक्षों का अध्ययन करनवाले शास्त्र विविध समाज-विज्ञान के नाम से जाने जाते हैं। लोकवार्ता में मनुष्य जीवन से सबंधित आदिम युग से चले आ रहे मनुष्य जीवन की परंपरा, लोक कथाएँ, अंधविश्वास, धार्मिक विधि-विधान, प्रथाएँ, नृत्य तथा प्रकृति आदि विषय आते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि विविध समाजशात्रों के अध्ययन के लिए बहुत सी सामग्री लोक साहित्य में प्राप्त हो जाती है। जैसे नृविज्ञान, भाषा विज्ञान, इतिहास, पुरातत्त्वशास्त्र, मनोविज्ञान आदि मानव समाज का अध्ययन करने वाले शास्त्रों से संबंधित सामग्री लोक साहित्य में प्राप्त हो जाती है। कोई भी एक शास्त्र स्वतन्त्र रहकर अपना विकास नहीं कर सकता है, उसका संबंध अन्य शास्त्रों के साथ होता है। यहाँ लोकवार्ता का अन्य शास्त्रों से संबंध को देख सकते हैं।

पुरातत्त्वशात्र

यह शास्त्र किसी मानव-समाज के पुरातन से पुरातन मनुष्य जीवन की खोज करने की दिशा में अध्ययन करता है।'किस युग में किस प्रकार का मानव जीवन,उसका रहन-सहन, आवास, भोजन, दैनिक उपयोग के उपकरण, प्रथाएँ, रीति-रिवाज,विश्वाश,त्यौहार, मेले, पूजा, देवी-देवताओं के स्वरूप, मंदिर, वास्तुकला, पच्चीकारी, विविध कलाओं की सृजन का स्वरूप था, यही पुरातत्त्वशास्त्र का विषय माना जाता है। हिंदी में डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोकसाहित्य के इस महत्व को पहचाना था और लोकसाहित्य एवं लोकवार्ता के माध्यम से पुरातत्त्वविदों के लिए कार्य करने की प्रेरणा एवं पुरातत्त्व की कड़ियों को जोड़ने के मार्ग को प्रशस्त किया था।[4] उद्धृत पन्क्तियों से यह कह सकते है कि पुरातत्त्वशास्त्र में मानव जीवन संबंधित रहन-सहन, आवास, भोजन, दैनिक उपयोग के उपकरण आदि कार्य समाहित है। पुरातत्त्वशास्त्र के संबंध में हिंदी में डॉ.वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोकवार्ता के माध्यम से पुरातत्त्वविदों के लिए कार्य करने की प्रेरणा देने के साथ-साथ पुरातत्त्व की कड़ियों को लोकवार्ता से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त करने का सुझाव दिया है।

इतिहास

इतिहास आदिम काल से मनुष्य की गतिविधियों से सबंधित विवरण प्रस्तुत करता है। इतिहास एक ऐसा साधन है जो समाज के राजनीतिक,आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास से संबंधित विवरण देता है। इतिहास के पितामह हेरोडोटस (ई.पू. 484 -430) ने इतिहास को परिभाषित करते हुए कहा है कि-"अतीत में मनुष्य की विफलताओं के बारे में नहीं बल्कि मनुष्य विविध गतिविधियों के बारे में बतलाने वाला ही इतिहास है।"[5] उद्धृत परिभाषा से यह पता चलता है कि अतीत में मनुष्य से संबंधित विविध कार्यकलापों को इतिहास प्रस्तुत करता है। किसी भी क्षेत्र विशेष संबंधित लोकवार्ता में भी परंपरागत चली आ रही लोकोक्तियाँ, पहेलियाँ, गीत, पुराण-कथा, अवदान, लोक कथा, धार्मिक संस्कार, जादू, डायन-विद्या आदि गतिविधियां आती हैं। क्षेत्र के इतिहास के विषय में कुछ तथ्य लोकवार्ता में उपलब्ध होते हैं और जब तक पुरातत्त्व विद्वानों द्वारा कुछ खोज न की जाये, तब तक इतिहास से जोड़ने काम लोकवार्ता से ही लिया जाता है।

समाजशात्र

इसका अध्ययन क्षेत्र वर्तमान समाज में रहने वाली विभिन्न जातियों या समुदायों की सामाजिक प्रथाओं, रीति-रिवाजों तक फैला रहता है। लोकवार्ता में भी इन सारे विषयों की अभिव्यक्ति होती है। इस कारण से लोकवार्ता में समाजशास्त्र से संबंधित सामग्री उपलब्ध होती है। इस सामग्री का उपयोग कर समाजशास्त्री अपने अध्ययन का आधार बनता

है । इस विषय में यह पता चलता कि लोकवार्ता और समाजशास्त्र विषयों के बीच विषय संबंधित सामग्री का आदान-प्रदान होता है।

नृ-विज्ञान

नृ-विज्ञान या मानव विज्ञान मनुष्य से संबंधित भौतिक एवं सांस्कृतिक दोनों पक्षों का अध्ययन निहित होता है । नृ-विज्ञान का विषय इतना व्यापक है कि जो कुछ भी मानव से संबंधित है उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। मानव और उसके कार्यों से संबंध रखने वाले विज्ञानों में से यह सबसे अधिक व्यापक है। मानव का अध्ययन करनेवाला केवल यही एक विज्ञान नहीं है। जैविक विज्ञान, शरीर विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान आदि विज्ञानों में भी मानव के शारीरिक तंत्र का अध्ययन किया जाता है।[6] सांस्कृतिक और शारीरिक दोनों मानव विज्ञान की शाखाएँ लोकवार्ता के अध्ययन से अनेक नये अध्यायों का आरंभ करती है।

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान वह विज्ञान है, किसी व्यक्ति, वर्ग, समूह की विविध परिस्तिथियों उत्पन्न होने वाली मानसिक प्रक्रियाओं में अध्ययन करता है । दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो क्रमबद्ध रूप से प्रेक्षणीय व्यवहार का अध्ययन करता है तथा प्राणी के भीतर के मानसिक एवं शारीरिक प्रक्रियाओं जैसे - चिन्तन, भाव आदि तथा वातावरण की घटनाओं के साथ उनका संबंध जोड़कर अध्ययन करता है। लोकवार्ता में भी समूहगत स्तर पर हो या व्यक्तिगत स्तर पर हो उनकी मनोदशाओं, चिन्तन, भाव आदि अभिव्यक्ति में निहित रहते हैं।

भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान के अंतर्गत भाषा की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास ध्वनि, शब्द, पद और वाक्य के साथ-साथ उसके अर्थ आदि का भी वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है । भाषा के इन सभी अंगों का ऐतिहासिक अध्ययन भी इसके अंतर्गत किया जाता है। भाषा वह साधन है किसी व्यक्ति, वर्ग,समुदाय आदि के विचारों को भाषा के जरिये अभिव्यक्त कर सकते है । किसी विशेष क्षेत्र के सामान्य जनता के परंपरागत चली आ रही प्रथाएँ, गीत, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, ध्वनियाँ आदि को किसी भाषा और बोली में अभिव्यक्त किया जा सकता है। अतः सामान्य जनता के परंपरागत साहित्य में कहीं शब्द, पद, वाक्य आदि समाहित रहते ही हैं। इन सारे अंगों का अध्ययन करने के लिए भाषा वैज्ञानिकों को लोकवार्ता से सामग्री प्राप्त हो सकती है।

भूगोल

'जियोग्रफी' शब्द की व्युत्पत्ति 'जियो' और 'ग्रफीया' दो ग्रीक शब्दों से हुई है । जियो का अर्थ धरती और 'ग्रफीया' का अर्थ वर्णन है । 'जियोग्रफी' शब्द का प्रयोग प्रथम बार एरिस्टोस्तनिस नामक वैज्ञानिक ने किया था। पहले 'जियोग्रफी' शब्द का उपयोग धरती के वर्णन के लिए किया जाता था। लेकिन आज 'जियोग्रफी' शब्द, मनुष्य जगत का धरती से संबंधित पुरे विषयों के साथ संबंध क्या रहा है, उस अर्थ में प्रयोग किया जा रहा है। धरती पर बहुत सारे जीव निवास करते हैं, जैसे पेड़-पौधें, जानवर, मनुष्य आदि। इससे हम कह सकते हैं कि किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित पेड़, पौधे, अन्य जीव जगत आदि का समाचार लोकवार्ता में भी सामग्री के रूप में उपलब्ध होता ही है।

अर्थशास्त्र

अपने आस-पास के परिसर का निरिक्षण करने पर लोग कृषि, व्यापर, उद्योग आदि में निमग्न रहते हुए नजर आ जाते हैं। इन कार्यों का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि मनुष्य अपने इच्छाओं को पूरा करने के लिए धन अर्जित करता है। धन अर्जित करने के लिए किये जाने वाले कार्यों को आर्थिक कार्य कहते हैं। यह आर्थिक कार्य ही अर्थशास्त्र के विषय में आ जाते हैं। लोकवार्ता एक ऐसा विषय है जिसमें सामान्य जगत से संबंधित अनेक कार्य आते हैं जैसे, बढ़ई, लुहार, हस्त कला, कृषि आदि। इन सारे कार्यों का मुख्य उद्देश्य यही रहा है कि कुछ न कुछ धन अर्जित किया जाय और उस धन से अपना जीवन यापन हो सके। तो फिर लोकवार्ता में अर्थशात्र से संबंधित सामग्री भी उपलब्ध होती है।

चिकित्सा-विज्ञान

मनुष्य और पशुओं के रोगों की चिकित्सा करने के लिए मनुष्य ने परंपरागत चिकिस्ता पद्धतियों को अपनाया है । सामान्य जन अपने चिकित्सा से संबंधित विविध रोग उपचार के लिए आयुर्वेदिक औषधियों का उपयोग किया है । कभी-कभी वर्तमान युग में भी सामान्य जन लोकोपचार पर ही आधारित रहते हैं । इन पुरातन लोकोपचार पद्धतियों का समाचार हमें लोकवार्ता में मिल जाता है।

लोकवार्ता की विशेषताएँ

लोकवार्ता में भाषा का प्रयोग शिष्ट साहित्यिक के भाषा की तरह प्रयोग न होकर सामान्य जन की भाषा का प्रयोग होता है। लोकवार्ता की विषयवस्तु लोक-जीवन जीवन से संबंधित लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकोतियाँ तक ही सीमित नहीं बल्कि विशेष क्षेत्र आदि भी विषय इसके अंतर्गत आते हैं। लोक साहित्य में किसी विशेष समुदाय का योगदान रहता है। यही वजह है कि लोक-साहित्य पर किसी व्यक्ति की छाप न होकर सामूहिकता की छाप होती है । लोक साहित्य की परंपरागत प्रदर्शन शैली बदलते रहती है।

लोकवार्ता की मूलभूत विशेषताओं को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है-'जनात्मकता, कलात्मकता, सामूहिकता और मौखिकता ।'[7] लोकवार्ता की विशेषताओं को देखने पर यह समझ में आता है कि इसके अंतर्गत सामान्य जन की अभिव्यक्ति, कलाएँ, समूहगत सह भाग और मौखिकता आदि विषय समाहित होते हैं। लोक साहित्य की सामान्य विशेषताओं को भी हम देख सकते हैं –'लोकाभिव्यक्ति, यह एक मौखिक परंपरा द्वारा विकशित होनेवाली प्रक्रिया है, सीधी-सादी, अलंकार रहित शैली का प्रयोग, रचनाकार तथा रचनाकाल अज्ञात रहता है, लोक मानस की अकृत्रिम अभिव्यक्ति ।'[8] लोक साहित्य में परंपरागत विकास की प्रक्रिया चलती रहती है। मौखिक साहित्य के रचयिता और रचानानाकल को हम किसी समय सीमा में समेट नहीं सकते हैं और इसके अभिव्यक्ति का रूप अकृत्रिम है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि किसी शोध विषय के लिए एक से अधिक अध्ययन पद्दतियों और अध्ययन क्षेत्रों से सामग्री संकलन कर उस सामाग्री का विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकन करना । किसी विशिष्ट शोध विषय के लिए उपुक्त अन्य विषयों से सामग्री, शोध प्रविधि और मूल्यांकन की प्रक्रिया को लेकर अपने विषय का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करना।

संदर्भ

1. बृहत् हिंदी पर्यायवाची शब्द-कोश,सं.गोविन्द चातक, पृष्ठ सं.235.

2. लोक साहित्य विज्ञान, डॉ.सत्येन्द्र, पृष्ठ सं.1
3. लोक संस्कृति की रूपरेखा, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृष्ठ सं.4.
4. लोक साहित्य:सिद्धांत और प्रयोग, डॉ. श्रीराम शर्मा,पृष्ठ.सं.21.
5. ग्यारवीं कक्षा पाठ्यग्रन्थ, इतिहास, इंटरमीडिएट पृष्ठ.सं.3.
6. भारत की जनजातियाँ,डॉ. शिवतोष दास,पृष्ठ.सं.27.
7. हिंदी लोक साहित्य (प्रथम खण्ड), डॉ. गणेशदत्त सारस्वत, पृष्ठ.सं.9.
8. हिंदी निबंध, जैन एवं कुलश्रेष्ठ,पृष्ठ.सं.51.